कलेमाते क़ेसार

कलेमाते इमाम अली (अ॰)

सय्यद रज़ी (र0)

कलेमाते क़ेसार कलेमाते क़ेसार

४६१-४७९

४६१- बहुत से लोग अपने बारे में तारीफ़ ही से मुब्तिलाए फ़ित्ना हो जाते हैं।

४६२- दुनिया दूसरों के लिये पैदा हुई है और अपने लिये नहीं पैदा की गई है।

(((दुनिया की तख़लीक़ मक़सूद बिलज़ात नहीं है वरना परवरदिगार इसको दाएमी और अबदी बना देता। दुनिया को फ़ना करके आख़ेरत को मन्ज़रे आम पर ले आना इस बात की दलील है के उसकी तख़लीक़ आख़ेरत के मुक़दमे के तौर पर हुई है अब अगर कोई शख़्स इसे क़ुरबान करके आख़ेरत कमा लेता है तो गोया उसने सही मसरफ़ में लगा दिया वरना अपनी ज़िन्दगी भी बरबाद की और मौत को भी सही रास्ते पर नहीं लगाया।)))

४६३- बनी उमय्या में सबका एक ख़ास मैदान है जिसमें दौड़ लगा रहे हैं वरना जिस दिन इनमें इख़्तेलाफ़ हो गया तो उसके बाद बिज्जू भी उन पर हमला करना चाहेगा तो ग़ालिब आ जाएगा।

सय्यद रज़ी - मिरवद अरवाद से मिफ़अल के वज़्न पर है और अरवाद के मानी फ़ुरसत और मोहलत देने के हैं जो फ़सीहतरीन और अजीबतरीन ताबीर है जिसका मक़सद यह है के उनका मैदाने अमल यही मोहलते ख़ुदावन्दी है जिसमें सब भागे चले जा रहे हैं वरना जिस दिन यह मोहलत ख़त्म हो गई सारा निज़ाम दरहम व

बरहम होकर रह जाएगा।

٤٦٤- अन्सारे मदीना की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया - ख़ुदा की क़सम इन लोगों ने इस्लाम को उसी तरह पाला है जिस तरह एक साला बच्चे नाक़ा को पाला जाता है अपने करीम हाथों और तेज़ ज़बानों के साथ।

٤٦٥- आंख एक़ब का तस्मा है।

सय्यद रज़ी - यह एक अजीब व ग़रीब इसतआरा है जिसमें इन्सान के एक़ब को ज़र्फ़ को तशबीह दी गई है और उसकी आंख को तस्मा से तश्बीह दी गई है के जब तस्मा खोल दिया जाता है तो बरतन का सामान महफ़ूज़ नहीं रहता है। आम तौर से 'शोहरत यह है के पैग़म्बरे इस्लाम (स॰) का कलाम है लेकिन अमीरूल मोमेनीन (अ॰) से भी नक़्ल किया गया है और इसका ज़िक्र किताबुल मुक़तज़ब में बाबुल फ़ज़ बिल हुरूफ़ में किया है।

(((मक़सद यह है के इन्सान की आंख ही उसकी तहफ़्फ़ुज़ का ज़रिया है सामने से हो चाहे पीछे से। लेहाज़ा इन्सान का फ़र्ज़ है के इस नेमते परवरदिगार की क़द्र करे और इस बात का एहसास करे के यह एक आंख न होती तो इन्सान का रास्ता चलना भी दुश्वार हो जाता। हमलों से तहफ़्फ़ुज़ तो बहुत दूर की बात है।)))

٤٦٦- लोगों के उमूर का ज़िम्मेदार एक ऐसा हाकिम बना जो ख़ुद भी सीधे रास्ते पर चला और लोगों को भी उसी रास्ते पर चलाया। यहाँ तक के दीन ने अपना सीना टेक

दिया।

(((शेख़ मोहम्मद अब्दा का ख़याल है के यह सरकारे दो आलम (स॰) के किरदार की तरफ़ इशारा है के जब आपका इक़्तेदार क़ायम हो गया तो आपने लोगों को हक़ के रास्ते पर चलाना शुरू किया और इसका नतीजा यह हुआ के इस्लाम ने अपना सीना टेक दिया और उसे इस्तेक़रार व इस्तेक़लाल हासिल हो गया।)))

४६७- लोगों पर एक ऐसा सख़्त ज़माना आने वाला है जिसमें मवस्सर अपने माल में इन्तेहाई बुख़ल से काम लेगा हालांके उसे इस बात का हुक्म नहीं दिया गया है और परवररिदगार ने फ़रमाया है के "ख़बरदार आपस में हुस्ने सुलूक को फ़रामोश न कर देना।" इस ज़माने में अशरार ऊंचे हो जाएंगे और अख़्यार को ज़लील समझ लिया जाएगा। मजबूर व बेकस लोगों की ख़रीद व फ़रोख़्त की जाएगी हालांके रसूले अकरम (स॰) ने इस बात से मना फ़रमाया है।

(((यहाँ मजबूर व बेकस से मुराद वह अफ़राद हैं जिनको ख़रीद व फ़रोख़्त पर मजबूर कर दिया जाए के इस्लाम ने इस तरह के मामले को ग़लत क़रार दिया है और इस शरा को ग़ैर क़ानूनी क़रार दिया है। लेकिन अगर इन्सान को मामले पर मजबूर न किया और वह हालात से मजबूर होकर मामला करने पर तैयार हो जाए तो फ़िक़्ही एतबार से इसमें कोई हर्ज नहीं है के इसमें इन्सान की रिज़ामन्दी शामिल है चाहे वह रज़ामन्दी हालात की मजबूरी ही से पैदा हुई हो)))

४६८- मेरे बारे में दो तरह के लोग हलाक हो जाएंगे - हद से आगे बढ़ जाने वाला दोस्त और ग़लत बयानी और अफ़तरपरवाज़ी करने वाला दुश्मन।

सय्यद रज़ी - यह इरशाद मिस्ल इस कलामे साबिक के है के "मेरे बारे में दो तरह के लोग हलाक हो गए ग़ूलू करने वाला दोस्त और अनाद रखने वाला दुश्मन"

४६९- आपसे तौहीद और अदालत के मफ़हूम के बारे मेंं सवाल किया गया तो फ़रमाया के तौहीद यह है के उसकी वहमी तसवीर न बनाई जाए और अदालत यह है के इसके हकीमाना अफ़आल को मुतहम न किया जाए।

४७०- हिकमत की बात से ख़ामोशी इख़्तेयार करना कोई ख़ूबी नहीं, जिस तरह जेहालत के साथ बात करने में कोई भलाई नहीं है।

४७१-बारिश के सिलसिले में दुआ करते हुए फ़रमाया "ख़ुदाया, हमें फ़रमाबरदार बादलों से सेराब करना न के दुश्वारगुज़ार अब्रों से।

सय्यद रज़ी- यह इन्तेहाई अजीब व ग़रीब फ़सीह कलाम है जिसमें हज़रत ने गरज चमक और आन्धियों से भरे हुए बादलों को सरकश ऊँटों से तशबीह दी है जो दूहने में मुतीअ और सवारी में फ़रमाबरदार हों।

४७२-आपसे अर्ज़ किया गया के अगर आप अपने सफ़ेद बालों का रंग बदल देते तो ज़्यादा अच्छा होता? फ़रमाया के ख़ेज़ाब एक ज़ीनत है लेकिन हम लोग हालाते मुसीबत में हैं (के सरकारे दोआलम (स॰) का इन्तेक़ाल हो गया है)

(((इसमें कोई शक नहीं है के ख़ेज़ाब भी सरकारे दो आलम (स॰) की सुन्नत का एक हिस्सा था और आप इसे इस्तेमाल फ़रमाया करते थे चुनांचे एक मरतबा हज़रत ने सरकार (स॰) से अर्ज़ की के या रसूलल्लाह! इजाज़त है के मैं भी आपके इत्तेबाअ में ख़ेज़ाब इस्तेमाल करूं तो फ़रमाया नहीं उस वक़्त का इन्तेज़ार करो जब तुम्हारे मोहासिन तुम्हारे सर के ख़ून से रंगीन होंगे और तुम सजदए परवरदिगार में होगे। यह सुनकर आपने अर्ज़ की के या रसूलल्लाह इस हादसे में मेरा दीन तो सलामत रहेगा? फ़रमाया बेशक! जिसके बाद आप मुस्तक़िल उस वक़्त का इन्तेज़ार करने लगे और अपने को राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने की तैयारी में मसरूफ़ हो गए।)))

٤٧٣- राहे ख़ुदा में जेहाद करके शहीद हो जाने वाला इससे ज़्यादा अज्र का हक़दार नहीं होता है जितना अज्र उसका है जो इख़्तेयारात के मावजूद इफ़्फ़त से काम ले के अफ़ीफ़ व पाकदामन इन्सान क़रीब है के मलाएकाए आसमान में शुमार हो जाए।

(((यह बात तय शुदा है के राहे ख़ुदा में क़ुरबानी एक बहुत बड़ा कारनामा है और सरकारे दो आलम (स॰) ने भी इस शहादत को तमाम नेकियों के लिये सरे फ़ेहरिस्त क़रार दिया है लेकिन इफ़्फ़त एक ऐसा अज़ीम ख़ज़ाना है जिसकी क़द्र व क़ीमत का अन्दाज़ा करना हर एक के बस का काम नहीं है ख़ुसूसियत के साथ दौरे हाज़िर में जबके अज़मत का तसव्वुर ही ख़त्म हो गया है और दामाने किरदार के दाग़ों ही को सबबे ज़ीनत तसव्वुर कर लिया गया गया है वरना इफ़्फ़त के बग़ैर इन्सानियत का कोई मफ़हूम नहीं है और वह इन्सान, इन्सान कहे जाने के क़ाबिल नहीं है जिसमें इफ़्फ़ते किरदार न पाई जाती हो।
अफ़ीफ़ुल हयात इन्सान मलाएका में शुमार किये जाने के क़ाबिल इसीलिये है के

इफ़फ़ते किरदार मलाएका का एक इम्तियाज़ी कमाल है और उनके यहाँ तरदामनी का कोई इमकान नहीं है लेकिन इसके बाद भी अगर बशर इस किरदार को पैदा कर ले तो इसका मरतबा मलाएका से अफ़ज़ल हो सकता है। इसलिये के मलाएका की इफ़फ़त क़हरी है और इसका राज़ इन जज़्बात और ख़्वाहिशात का न होना है जो इन्सान को ख़िलाफ़े इफ़फ़त ज़िन्दगी पर आमादा करते हैं और इन्सान इन जज़्बात व ख़्वाहिशात से मामूर है लेहाज़ा वह अगर इफ़्फ़ते किरदार इख़्तेयार कर ले तो इसका मरतबा यक़ीनन मलाएका से बलन्दतर हो सकता है।)))

٤٧٤- क़नाअत वह माल है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं है।

सय्यद रज़ी- बाज़ हज़रात ने इस कलाम को रसूले अकरम (स॰) के नाम से नक़्ल किया है।

٤٧٥- जब अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने ज़ियाद अबीह को फ़ारस और उसके एतराफ़ पर क़ायम मुक़ाम बना दिया तो एक मरतबा पेशगी ख़ेराज वसूल करने से रोकते हुए ज़ियाद से फ़रमाया के ख़बरदार- अद्ल को इस्तेमाल करो और बेजा दबाव और ज़ुल्म से होशियार रहो के दबाव अवाम को ग़रीबुलवतनी पर आमादा कर देगा और ज़ुल्म तलवार उठाने पर मजबूर कर देगा।

٤٧٦- सख़्त तरीन गुनाह वह है जिसे इन्सान हलका तसव्वुर कर ले।

٤٧٧- परवरदिगार ने जाहिलों से इल्म हासिल करने का अहद लेने से पहले ओलमा से

तालीम देने का अहद लिया है।

४७८–बदतरीन भाई वह है जिसके लिये ज़हमत उठानी पड़े।

सय्यद रज़ी - यह इस तरह के तकलीफ़ से मशक़्क़त पैदा होती है और वह शर है जो उस भाई के लिये बहरहाल लाज़िम है जिसके लिये ज़हमत बरदाश्त करना पड़े।

४७९–अगर मोमिन अपने भाई से एहतेशाम करे तो समझो के उससे जुदा हो गया।

सय्यद रज़ी‘- चश्महु अहशमहू उस वक़्त इस्तेमाल होता है जब यह कहना होता है के उसे ग़ज़बनाक कर दिया या बक़ौले शर्मिन्दा कर दिया इस तरह एहतशमहू के मानी होंगे ‘‘उससे ग़ज़ब या शरमिन्दगी का तक़ाज़ा किया- ज़ाहिर है के ऐसे हालात में जुदाई लाज़मी है।

((यह हमारे अमल की आख़िरी मन्ज़िल है जिसका मक़सद अमीरूल मोमेनीन (अ॰) के मुन्तख़ब कलाम का हिन्दी में शाया करना था और ख़ुदा का शुक्र है के उसने हम पर यह एहसान किया के हमें आप (अ॰) के मुक़द्दस कलेमात को बक़द्रे मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। हमारी तौफ़ीक़ सिर्फ़ परवरदिगार से वाबस्ता है और उसी पर हमारा भरोसा है, वही हमारे लिये काफ़ी है और वही हमारा कारसाज़ है और यह काम माहे रजब १४३२ हिजरी में इख़्तेताम को पहुंचा है (माहे रजब में ही मौलाए कायनात हज़रत अली (अ॰) की विलादत के मौक़े पर एक कोशिशे मेहनत है) अल्लाह

हमारे सरदार हज़रत ख़ातेमुल मुरसलीन और सिलसिलए हिदायत के सरचश्मों पर रहमत नाज़िल करे। व आख़ेरूद्दावाना अनिल हम्द....))

(**टाइपिंग वग़ैरा की ग़लतियों के लिये माज़ेरत ख़ाँ हूँ**)